

## विषय-सूची

- १ प्रकाशकीय वक्तव्य
- २ वक्तव्य (संकलनिका)
- ३ डाक न परिचय
- ४ समर्पण ओ चित्र (दाताक)

### विशुद्ध डाक वचन (षट्तरण ग्रन्थ)

- १ व्यवहार प्रवीण सँ उद्भूत
- २ विविध निर्णय
- ३ ग्रामवास विचार
- ४ तद्विषय विक्रमोर्वशी
- ५ प्रकीर्ण नामक अतिथि ग्रन्थ

### प्रकाशित खण्ड

१ सामान्य प्रकरण	१५
२ गृहस्थ प्रकरण	२१
३ खेती प्रकरण	३२
४ वर्षा प्रकरण	३६
५ वर्षा प्रकरण	४२
६ गृहस्थधर्म प्रकरण	५४
७ यात्रा प्रकरण	५६
८ उद्भूत प्रकरण	६०
९ ग्रहण	६६
१० प्रश्न प्रकरण	६६
११ वनस्पति प्रकरण	६७
१२ विविध प्रसङ्ग	६८
१३ प्रकीर्ण	६९

—:ॐ:—

ॐ विशुद्ध डाक वचन ॐ

## —विशुद्ध डाक वचन—

( तालपत्र-लिखित )

—००५५००—  
००५५००—

राशि-स्वभाव विचार—

मेष मीन मिथ्र दण्डा दीस,  
ता उप्परि दिअ पल अठतीस ।  
वृष कुम्भ चौदण्डा मान,  
पल एगारह भृगु मिस मान ॥  
मिशुन मकर पल तीनि गुनू,  
कर्कट सैतालीस धनू ।  
सिंहहि वृश्चिक सप्ततलीस,  
तुल सह कन्या पल अठतीस ॥  
मिशुना सचो मोचे,  
मोचे सब पल कहिअ ।  
पाँचे दण्डे सबे पल लहिअ ॥

तिप्पसा कर्णा वाढता मुख्य देवहा तीस ।  
ताहे ओढे भुमिसुअ मास अठारह सीस ॥  
जते देवहा चन्दगड तते शनि रवि साखि ।  
बारह मास बेहफय इति गुनि वृत्तु कावि ॥



सुहृत् विचार—

तिथि परिमाणह साठि दण्डा, से छप करह बारह खण्डा ।  
अशं भदा कितिक मूल, मनह डाक सबेटा करे चूर ॥

सिद्धियोग (तथा च डाकः)—

नवजी चौठि चौदशि भउ पोड़े,  
पड़िष एकादशि छठिक विजोड़े ।  
तिअ अट्टवि वेरशि भूपुत्ते,  
सओनि दुइ दोआदशि वा उत्ते ।  
पाँचनि पुनिमा दशनि वेदफकय,  
सिद्धियोग एहु मुनिवर जम्पण ॥

यमघण्ट विचार—

जइ रविचारे मघा धनिष्ठा सोमे पुष्य विशाखा(खा)जडा ।  
मङ्गल कृत्तिक भरणि विरुद्धा, कर पूषफल्गुनी बुध विरुद्धा ॥  
चारे वेदफक मूल रेवती, शुक्ल(क)हि बारहि रोहिनि स्वाती ।  
अवणा शतभिश जइ शनिचारे, एहु यमघण्ट कहिअ गोआरे ॥

दग्धतिथि—

सनि सत्ते शुक्ल छप दुइ, छठि वेदफकय होण विरुद्ध ।  
बुध तीअ दोअशि सूर, मङ्गल दशमी परिहर दूर ॥  
होण एकादसि सोमेचारे दग्धतिथि फूर कहिअ गोआरे ॥  
(रवि-१२, सोम-११, मङ्गल-१०, बुध-२, गुरु-६, शुक्र-२, शनि-७)

राहुदय—

पूर्वा दाह पावाडने (ले ?) अरस चलन्ते चलइ ।  
विभस बिदिसे जाइ यामे पाळे शुभ कहइ ॥  
जइ अगोतह खाइ.....

योगिनी विचार—

पत्ती पचा पासा दूआ, नवे नवे योगिनि हुआ ॥  
( ई पाठ छपल “डाकवचनामृत” ने भेटैछ )

पशुयाश विचार ( तत्र डाकः )—

तिजिओ पूर्व मगसनि ज्येष्ठा-  
भरणि विशाख (ख) अश्लेष धनिष्ठा ।  
चालिअ चौपा होइह धूदी,  
जत्तहि चालिअ तत्तहि सिद्धी ॥

द्वितीयोदितचन्द्र विचार—

मच्छाभेडा दाहिना अवसरे उत्तर काब्जि ।  
घनइव लडा समहिंसम अवर बोलि बूजू काब्जि ॥

अठदिशा—

पच विराडा सिंह सुनह अहि मूसा गज मेघ ।  
अचे हले दुहुकरसे गुणि वर गपमान डलोख ॥  
मेघे गूसे बहुसम्पत्ती गजे विराडे अतिकर सुद्धी ।  
नागे सिंहे होइह खेष्टा-सुनहे धरि पङ्गादिअ भेष्टा ॥

नवाज मन्त्र ( तथा च डाकः )—

अस्तनि रेवण अथर धनिष्ठा  
इत्थ आदि कण पाचम खण्डा



—चारि—

एकरा उत्तर दुइ गुरु सन्त्री  
कापल परिहर न करह भन्ती ॥  
संखा सो (ना ?) परिहर रत्ता  
वरषा शत एक जीवतु कन्ता ॥  
पुण्य पुनर्पुण्य सुपरिहरह रोहिणि पालह वज्र,  
तीनि उत्तर परिहरह जइ भत्तारे कज ॥

जीवन्मृत-विचार ( तथा च डाकः )—

कहुइ धान किं अस्सनि भवणे  
अहा रेवण सुगकर मूले ।  
मघा सवाती न कर विचार  
चाउत सुगुरु शुक्र चार ॥

गामरास विचार—

सेवक रे सुनु गामक वत्ता,  
अखलर होगुण चौगुण मत्ता ।  
गामे नामे एक करिजइ,  
गुनि अक्के भाग हरिजइ ॥  
एक सून जओ पावसि चारि,  
छाड दलसिद्धि होइह मारि ।  
तीओ पाँचे मान समान ।  
वेधिल्लक जओ पावसि ओरे,  
सर्वओ वित्त समसिद्ध तोरे ॥

—पाँच—

अटदिशा—

पक्षी वसुशर पञ्च मजार-  
षट् केशरी सुनह सरचारि ।  
अहिशर सात हनुशर एक,  
गजशर तीनि वैरिशर मेप ॥  
पत्ति विराडा सिंह सुनह-  
अहि मूला गज मेप ।  
अचे हले मिलि दुहु करसे,  
गुनिवर सपमानवशेप ॥

मेपे मूसे बहुसम्पत्ती - गजे विराडे अतिकर सिद्धी ।  
नागे सिंह होइह सेष्टा-सुनहे चारि पक्षी तिअ मेष्टा ॥

अनर गोडीय प्रकारः—

गामे ठामे नामे जान सोम शुक्र बुद्ध पो (खो) जिआने आन ।  
बोलधि डाक एतेओ कएलेप(ख)अलपे कालें किछु सम्पद देख ॥

फलश्रुतिः—

अओ कुजे लावए ठाओ गोधन जन नहि बडावए काओ ।  
उदये हो तँ बहए अण्ड, उदए भरि आन पावए भओ ॥  
भान्दे बुधे लावए डाओ तारेहि बसा सम्पत्ति पुबजाओ ।  
लच्छी थाकए ता हेरि गेहे, होइ चान्द ठानि रह पहरे ॥  
गुरुदीसा लाभ छाडिवाओ मूलहुँ चोरी बोलए चालए ।  
सकुलए नव सञ्चित धन न हरइ नर..... ॥



—छी—

शुक्रहि दीसा बहए जये पुत्र परिवार बढ़ायए सथे ।  
सनि दीसा लावए पू०..... हाथे आतए लावए रूर ॥

अपरख डाकः—

वरगक कर सवे वृभइल आन,  
वृभितहुँ वृभइलें कर अनुमान ।  
जोइसि जोए सविथ कएलेइ,  
दाहिन सर वाम कएलेइ ॥  
मुन मुन स्वामिओ गानक नाग,  
जे जाह आगर से ने भाग ॥

गर्भापत्य विज्ञाता (अपरख डाकः)—

अखर दोगुण चौगुण मत्ता भाग हरि बूड जले वेत्ता ।  
बल उज्जारे नाथ इकारे एहू धनी फुर कहल गोआरे ॥

स्त्री-पुरुष जीवन-मरण विज्ञाता—

अखर दोगुण चौगुण मत्ता भाग हरइ ता हरसि नेत्ता ।  
एकसून जवो पुरुष हल(य?)हुँ, वैरि होए जवो तिरि अविळ(य?)हुँ ॥

अथसेवा चक्रम् (तत्र डाकः)—

सिरसत्ता उरसत्ता पिच्छिहि देहि पञ्चण (म?) खत्ता ।  
हाथे हुइ-हुइ पादहि चारि सेवाचक्र कहवो विचारि ॥  
सिर सम्मानइ देइल दृष्ट हीजे वित्त ससम्पद सधः ।  
हाथे देइल पुरवइ आस पिच्छि (हि) हि निष्फल पावो परवास ॥

—साव—

अरिपट्टक लक्षण (तत्र डाकः)—

धनु बृष बुध्निक मृगसांनी भरण करा अरिपट्टक जानी ।

[ ई म० म० हरपति कृत “व्यवहार प्रदीप” मे जे वचन प्राप्त भेल  
अदि शोकर प्रतिलिपि थिक । ]



[ २ ]

[ १. म० म० महाराज शुभकर दाऊर कृत “निधिद्वैध निर्णय” से ]

मुसरात्रि विचारे डाकः—तथाच भाषा—

खाती दीआ जो वरण विशाखा खेलए गाए ।  
अबस ओ नरवर जुझए अन्न मद्दघा जाए ॥

००००

[ २. “ग्रामवास विचार” ग्रन्थमे प्राप्त वचन ]

ग्रामवास विचार (अत्र डाकः)—

उत्तरे आगत कहिहे धीर-  
दक्षिण कुशल कहए बलवीर ।  
पूर्वे दिगे काख निषेध  
पश्चिम दिशा तहिलने पेध ॥  
चारि चौदीश कह दण्ड फारि  
होइह दरघरि होइह मारि-  
उत्तर दक्षिण कुशल थिर फइवास-  
चारु कोन बोल उदास ॥



—आठ—

पश्चिम दिशा दूर सवि बोल-  
करह काज पिआ होएअ अमोल ।  
ग्रामवासविचार क प्रकिया शिवाचलि पर अछि ।

००००

[ १. तदिपत्र-लिखित "पिकमोवैशी नाक" मे प्राप्त वचन ]  
तहरोपण विचार—(तत्र डाकः)

विष्पर पाकदि पधर कटि-  
पच्छिम लोहित फूल नहि आँट ।  
वायव तैतरि उत्तर तार  
ईसानक बदरी परत अकाल ॥

००००

[ २. "अर्कोण" नामक उपोत्तिष क ग्रन्थ सँ ]

अथ युजयोगिनी, यथा वा डाकः—

पत्नी पचा खसा दूआ नवे-नवे योगिनि हुआ ।  
अओवे योगिनि पचदह उद्वे दह परमान ।  
वामे दहिने तेरह तेरह नयो सम्मुख कए जान ॥

फलमर्थ—

अओवे योगिनि मार मारकर, पाछे अलि सुखवेए ।  
वामे योगिनि लाभ करावए, दहिने जीव हरिलेए ॥

काक शकुन, डाकः—

रवि लाभ [भ] सोम अरु सिद्धि, मङ्गल कलह परवास ।  
बुद्ध [घ] समागम बन्धु सँ, गुरु पूरण सवे आस ॥  
शुक्ल अमोअ... शनि मरण, काल मन्दफलजीन ।  
दाहिन दिन अरु वाम गुण, काक वचन परमान ॥

—नओ—

वर्षा सुवृष्टिकलम्, अत्र डाकः—

फाल्गुन चौदिस सम्बन्धकाल-  
वर्षा शुभक वाय विचार ।  
पूर्व पुरिआ बहए अनङ्गे-  
एक ओ मेव न लानए अङ्गे ॥  
अग्निकुमारी बोलए डाक-  
भुपे न सरते परजा भाग ।  
दक्षिण पवन बहए कतुसाल-  
अन्न न उपजए हाहाकाल ॥  
दक्षिण कोने सत्र खन बहइ-  
अवस सुभिस निरन्तर रहइ ।  
पच्छिम पछवा बहए अवार  
कोदव कुरधी हो वेवहार ॥  
भरडार कोन बोलए थोइसि-  
धोधी धोअए । कूआँ पैसि ।  
उत्तर पवन सहज जवों बहइ-  
भेड़रि अन्न मूल लहु कहइ ॥  
ईसान कोने हुन्दुर बाजए-  
सरि साक बसवे उपजावए ॥  
एतक परए बह जवों बारवान-  
अन दए धरनी अन दए बात ॥



—दस—

चन्द्रविचारः—

मेघ सिंह धनु पूरवे चन्दा-  
दक्षिण कन्या वृष मकरन्दा ।  
पश्चिम कुम्भ तुला अथ मिथुना ।  
उत्तर कर्कट वृश्चिक मीना ॥

अथ यात्रायात्रायां डाकः—

अश्विनि गमन कहए शुभ सिद्धी-  
भरणी गेल न जिव अबुद्धी ।  
किर्तिक काएक लन्तद दिजए-  
रोहिणि गमन मनहिमन खिजए ॥

मृगशिर गेल रभस बड़ावए-  
अदा गेल पलटि न आवए ।

पुष्य पुन सिद्धि पुनर्वसु गमने-  
पुष्यहि लेखि की लेख गमने ॥

गज असरेस पड़त कलेसे-  
मघा गेल घर यम केरो ।

पूर्वा फलगुनि कज न सिक्कइ-

तिम उत्तर तुर यम पाशहि बडिभअ [इ?] ॥

हस्तहि दहत कहओ सम्पत्ती-  
चित्ते चलइ न परइ विपत्ती ।

रमत सोआती जाएत जाँहा-  
मरत विशाँ जाँहा कहाँ ॥

—एगारह—

अवस ओ काज होइह अनुराधे-

जेठा पेठ भरए उँचाइ ।

मूज मूल किचड गुण पाइअ-

पूर्वापाद पलटि न आवइअ ॥

अवणा गेल कि सुनिअ अथ अवणे-

असुभफल होइह धनिष्ठा गमने ।

शतमिष हो जवोँ देव पसन्ता-

रेवण रमए होअए बहुधभा ॥

पड़िवा नवमी मूल शनि अवणा-

पूर्वे दिशि नहि सिक्कए गमना ।

पञ्चक अश्विनी वान गुण तेरह-

एहि दिवस जनु दक्षिण हेरह ॥

रवि छट्टि चोदसि रोहिणि पुषा-

पश्चिम गमने होइह दुख्खा ।

कुज दुइ दशमी जवोँ.....होअ-

हरथा उत्तर गमने अवस्था..... ॥

अद तिअ सोमे अतन्दय उच्छए-

चौरए अवसि युध नहि लच्छइ [ए?] ।

अक्के सप्तमि वायव नश-

डाक कह कुदइ सफहा ॥

बीज वपन विचारः = तनडाकः =

कुषिकाज बीआर मानव-

चारिकाज अठदास बपा (खा) नव ।

—बारह—

पूर्व नई अनाइवि कोणे-  
दक्खिन किञ्चित् नैऋत सोने ॥  
पच्छिम लाभ कोण पवन्न-  
उत्तर देस बहुत सुखरत्न ।  
ईशान कोण दैवते जाए-  
सगुनक देल सबे केओ खाए ॥  
शुकद वान शनीश्वर अरु घोड़-  
मङ्गलवार विआ हो थोड़ ।  
रवि अनाइवि सोम पइदहा-  
मुळ (घ) वृहस्पक वाडग कँहा ॥  
[वाडग रोपन जोतन हरठाठ ? ]



—अथ प्रकाशित खण्ड—



## मङ्गल वचन

गिरजा निरा ओ गोविन्द गोेश,  
सकल काज मे सुमिरी गिरिजेश ।  
पाँच गकारें बिट नहि होय ।  
कहथि 'ढाक' ई बुहु सब कोय ॥१॥

अथ सामान्य प्रकरण

तिथि नाम ज्ञान वचन—

पड़िया षष्ठी एकादशि नन्दा  
द्वितीया सप्तमी द्वादशि भद्रा ।  
तृतीया अष्टमी त्रयोदशि जया  
नवमी चतुर्दशि रिक्ता भया ॥  
पञ्चमी दशमी पञ्चदशि  
अमावास्या, कहथि "ढाक" ई पूर्णासमा ॥

सिद्धि योग—

शुक्रक पड़िया एकादशि होई,  
सिद्धि योग कह षष्ठी खब कोई ।  
बुधबोसर जौ भद्रा पावै,  
सिद्धि योग तेहि जग मे गावै ॥



—सोलह—

जया तिथि जौ मङ्गल होय,  
सिद्धि योग मन मानीय सोय ।  
शनि दिन मे रिक्ता जौ आवै,  
सिद्धयोग गुनि जन तेहि भावै ।  
पूर्णा तिथि गुरु वासर जानि,  
सिद्धि योग कह "ढाक" बखानि ॥

निन्दित योग—

रवि मङ्गल मे नन्दिका,  
भद्रा मे शुक्र चन्द्र ।  
बुध मे जया गुरु रिक्ता,  
शनि पूर्णा अति मन्द ॥

दश तिथि विचार—

मेघ कर्क केर पछी होई,  
धनुष मीन द्वितीया जोई ।  
वृष कुम्भ चतुर्थी जान,  
अष्टमि कन्या मिथुनहि मान ॥  
शुक्र सिद्ध दशमी भान,  
मकर तुला मे द्वादशी गान ।  
एहि विधि तिथि के दग्धा कही,  
शुभ कारज सब छोड़ि रही ॥

—सत्रह—

तारा विचार—

जन्म नक्षत्र सँ इष्ट नखत्रा,  
गणना केरि धरि देखिय पत्रा ।  
जाबत अंक एकठा भेल,  
तकरा केँ नव सँ भक्ति लेल ।  
शेष बाँचप से तारा जान,  
कह्य "ढाक" नाम गुण फल मान ।

तारा नाम विचार—

जन्म सम्पत्ति विपत्ति अरु होम,  
प्रथम साधक वध सुनु नेम ।  
मित्र ओ अति मित्र तारा नाम,  
"ढाक" कहि फल के धाम ।

चन्द्रफल विचार—

जन्म राशि सँ गणना करी,  
ओहि तत्त्वक चन्द्रमा धरी ।  
जाबत अंक आवै ई विधि,  
चन्द्र ज्ञान जानी एहि सिधि ।  
चारि आठ वारह के त्यागि,  
शेष चन्द्र शुभ कहिहूँ लागि ।

प्रसवार्थ घरमे प्रवेशक समय—

रोहिणि अवस्था सूर्य नक्षत्र  
शुभ वासर पैसी देखि पत्र ।



—अठारह—

कृत्स्न योग मे जन्मक फल—  
रवि रवि मंगल तीन तेजा  
श्रवण धनिष्ठा ओ अश्लेषा ।  
ओहि राति जे बालक होय,  
मात पिता संहारथ सोय ॥  
आष मरै कुछ भरि संहार,  
राशि गुनैत आभन के मार ॥  
लग्नहि कुजा लग्नहि सुना,  
लग्नहि होषण भासु तनुता ।  
की गर जननी की गर बाप,  
की ओ जातक अपनहि आप ॥

प्रसूतीक स्नान समय—

अनुराधा अश्विनी ध्रुव हस्ता,  
स्वाती पौष्णा नक्षत्रे शस्ता ।  
कुज रवि गुरुदिन करी नहान,  
कहथि “डाक” प्रसूती के जान ।

स्तनपानक दिन—

रिक्ता मंगल ओहि के धिष्टी,  
व्यतीपात वैश्वत अलि दुष्टी ।  
सुदु ध्रुव शिव नक्षत्रे जान,  
कहथि “डाक” माताक स्तन पान ।

—द्वन्विंश—

प्रथम क्षौर (मुंडन) क समय—

सहि गुरु शुद्धि वेद प्रकार,  
शुद्ध समय के करु ने विचार ।  
विषम वर्ष उत्तरायण जानि,  
चैत छाहि शुभवासर मानि ॥  
जन्म मास के दीपण त्यागि,  
व्योतिष उक्त नक्षत्र लागि ।  
आदि क्षौर बालकेर होय,  
“डाक” कहथि जानव सब कोय ॥

कर्णवेध—

जन्मक तारा जन्मक चन्द्र,  
जन्म मास ओ जन्म महेन्द्र ।  
दक्षिणायन होहि जानी शुभवार,  
सूर्य शुद्धि केर करी विचार ।  
अश्विनि पुष्य हस्त अरु अभिजित,  
मृग अनुराधा रेवती चित ।  
स्वाती हस्त ओ उत्तर तीन,  
विषम वर्ष कनछेदक दिन ॥  
शुभग्रहमे शुभ लग्न सुकाल,  
शुद्ध समय लेख “डाक” बेहाल ।



—बीस—

खड़ी धरवाक—

सौम्यायन शुभ कालहिँ जानि  
पौचम वर्षमे खड़ी आनि ।  
गणपति विष्णु सरस्वतीमा,  
पूजन कर शिशु अक्षर कामा ॥

उपनयन—

गर्भाष्टम वासन के काल,  
एगारह वर्ष चून्नी केर लाल ।  
चारहम वर्षे वैश्य केर बाल,  
मनुष्य समय हेतु रावनिँ चेहाल ॥  
सोलह बाइस चौबीस पर्यन्त,  
क्रम सीँ ब्राह्मसाधिवीकन्त ।  
वर्ष छुडि कह "डाक" गोआर,  
पौच सौँ सानहुँ करी बिचार ॥  
मकर कलस मछली अरु मेघ,  
हुव निधुन मे धरु ब्रत भेष ।  
द्वितीया तृतीया पंचमी शुभवार,  
दशमी एकादशि द्वादशि आर ॥  
सन्ध्या गहामह अन्ध्या त्याग,  
कुण्डलपञ्च ओ ग्रहणक भाग ।  
शुभ हुनुके शुद्ध करि जानि,  
धर्मशाम्र सँ होष बखानि ।

—एकैस—

आज्ञा श्रेष्ठा जेष्ठा मूल,  
रोहिनि उत्तर तीन समतूल ।  
मृग चित्रा रेवति अनुराध,  
हस्त पुष्य अश्विनि व्रत साध ॥  
दिति त्यागि सीनू पूर्वा जान,  
"डाक" कहथि उपनयनक मान ।  
श्रवण पुनर्वसु स्वाती,  
कहथि "डाक" उपनयनक पाती ॥

अथ गृहस्थ प्रकरण—

संमुख दक्षिण दीप नहि हो,  
कहथि "डाक" एक मुक्ति हो ।  
मामा फावण जेठ अणाह,  
कन्या विवाही कहथि गोआर ।  
रोहिनि रेवति मूल ओ स्वाती,  
मृग मघा अनुराधा ताथी ।  
द्वितीया, तृतीया पासा एगारह,  
तिथि केँ उत्तम जानि विवाह ॥  
पन्द्रह ताँस चौदह नौ चारि,  
त्यागि मध्यस कह शेष गोआर ।  
रवि कुज शनि वासर केँ जोड़ि,  
अधपहरा भद्रा केँ छोड़ि ॥



—वाइस—

दम्भा तिथि मासान्तहि त्यागि,  
करी विश्वाह शुभ शुभ कैं जागि ।  
जो कन्या नहि रखवा योग,  
शुद्ध जानि कर विवाह सुभोग ।

बधू प्रवेशक समय—

करी विवाह दिन सोछद मध्ये,  
विषम मास ओ वर्षहि साध्ये ।  
हस्त आदि कैं सोनि नखत्ता,  
मघा ब्रह्म सुग पुण्य धनिष्ठा ॥  
श्रवणा उत्तर मूल अनुराध,  
अरि रेवती बधू प्रवेश साध  
गुरु शुक चंद्र शनीचर दीना,  
कहि "डाक" बधु प्रवेशन चीना ।  
आठ पाठ बारह बुधवार,  
रिक्तहुँ त्यागी कहि गोआर ।  
शुक सूर्यक दोष नहि लाग,  
चन्द्र तार चलहुँ के त्याग ।

द्विरागमन—

विषम वर्ष घट अलि ओ मेघ,  
मिशुन क रविणें दुरागमन देख ।

—सईस—

मृदु ध्रुव क्षिप्र चर ओ मूल,  
शुभ वासरमे करि समतुल ॥  
रवि गुरु शुद्ध जानि कैं कही,  
दक्षिण संमुख शुक छोड़ि रही ॥  
शुक पक्षमे करिआह जानि,  
"डाक" कहै इति समय बखानि ॥

सुकान्धता कथन—

रेवती सौं मृगशीरा पर्यन्त,  
यावत दिन धरि चन्द्र उगन्त ।  
सत दिन शुक अन्ध भयजाधि,  
वर द्विरागमन करैल जाधि ॥  
संमुख दक्षिण कहि "डाक"—  
संमुख शुक पीठ वीश बुध,  
पेहना समर्थ दैत्यगुरु शुद्ध ।

वीह गुनधाक—

करन समान नापि कण काठी,  
वीर्य प्रमान नापि कण बाँटी ॥  
एके हाड़ दूजे चमार,  
तीनों विप्र चौठे शूद्र ।  
पाँचे यम छठे जनी,  
साते योगी आठें सुन ॥

—चौबीस—

हाड़ी पहिरावण साड़ी,  
चमार लय जाय काड़ी ।  
विप्र विचित्र आनीचो,  
शूर बहुत धन देवो ।  
यम पद्मीचो रोगी,  
सत्री करीचो भोगी ।  
योगी करण अन्नदुना,  
धुना करी ओ सूना ।

ढीह पर वास्तुक—

अचर दोरुन चौगुन माया,  
पूछों कन्ता गामक वार्ता ।  
गामें नामें एक करी,  
तासे सावे भाग धरी ।  
चेरि चेरि छठचो पावह मोरे,  
गेलो कितल पलहे तोरे ।  
एक शुन्य जों पावए चारी,  
छाड़इ गाम कि होवए मारी ।  
तीजें पाचै मान समान,  
कह्ति "डाक" ई गाम प्रमान ।

घर गुनवाक—

एक घरक तीजे धनवान, पाँचे होइ पुत्र फलवान ।  
साठे गहा पदारथ सिद्धि, कहए "डाक" जे एहि घर विधि ॥  
(पाठान्तर)

—पचीस—

गामें नामें ढीह एक करी,  
तामे आठें भाग धरी ।  
घर आङ्गन करिअह जानि,  
ई कहै अछि "डाक" वखानि ॥  
पक्षी वसु पछ मजार,  
पट केसरी श्वान सर चार ।  
अहिसर सात इन्दुसर एक,  
गज सर हीनि बेबु सर मेप ॥

वेरिमिथ कथन—

पहिराज केसरि लों संग,  
साय श्वान कें दोवर रंग ।  
गज मजारे हो अवलि,  
मेप ओ मुखहि बहु सम्पत्ति ।  
पक्षी नाग करत संहार,  
वन बिलाइ मूसा के मार ।

कोन बहक दशा मे घरवनओले कोन फल—

रथिक दशा जों करी घर,  
घरनी राजा मगड़ा कर ।  
सोम क दशा जों करी घर,  
दूधे पूते भरी घर ।  
मंगळ क दशा जों करी घर,  
घोड़ा घोड़ी मनुष मर ।



—अधीस—

बुध क दशा जो करी घर,  
बेटी बेहें भरय घर।  
गुरु क दशा जो करी घर,  
अटुट लक्ष्मी आयय घर ॥  
शुक्र क दशा जो करी घर,  
खीर खीड़ लय भोजन कर।  
शनि क दशा जो करी घर,  
घर घरनी सरय पर ॥  
राहु क दशा जो करी घर,  
सकल गोष्ठी सरय पर ॥

पुनः—

रवि कर कहल धन शनिवार,  
मंगल सरण कहल गोआर।  
बुध भे धन बिहके हो सिद्धि,  
शुक्रहि भोजन हो बहु वृद्धि।  
शनि हो रोग शोक ओ हानी,  
काल क दर्शे सरण के जानी ॥

कतथा हाथ क एह कर्तव्य—

गृहपति हाथ करय परमान,  
जत चाकर दीर्घ गुनि आन।  
एक छाड़ि आठ सो हरव,  
बाँकी रहल से लेखा करय ॥

—सत्ताइस—

फल—

एक अनेक तिह धनधान,  
बाँचे पुत्र होई फल मान।  
सातों सकल मनोरथ पूर,  
कहह “हाक” घर यदि विधिकूर ॥

सूर्य मंडल, चन्द्र मंडलक विचार—

दीर्घ चाकर सभ जो होइ,  
रवि मंडल कह सब फोइ।  
मंडल चन्द्र विविध सुख दाइ,  
उत्तर दक्षिणे दीर्घ जो पाइ ॥  
घर आऊन चितु जो करइ,  
पुत चित्त चित्त सबहु के हरइ।  
सोइह हस्त ऊँच तदि कीजय,  
“हाक” कहथि जे दिनदिन बीजय ॥

वास्तु खात खेवाक दिगं—

आदि भादव पूथे शीश,  
दक्षिण पश्चिम उत्तर धीश।  
तिनि २ भास विचारि भाग,  
धाम भाग सुतथि नाग ॥  
जत भूमिक घर करी,  
शिरम दीश सो छौ भागधरी।

बूँदें भाग शीर दीशक त्यागि,  
एक भाग पुच्छहुँ केर छागि ॥  
दूनु भाग जे मध्य में रहए,  
खात कर ई “डाक” कहए ।  
एक हाथ क खात करी,  
‘डाक’ भने पूजा कर मरी ।

घर छरखवाक वचन—

राजा सुखिछिर मन्दिर छावा,  
सोलह सहस्र श्रवि बुलावा ।  
हे श्रयो हम पूछी तोही,  
घर छावन विधि कह्यो मोही ।  
कहहि “डाक” पड़िवा मति छावहुँ,  
बल सँ कलइ काल जगावहुँ ।  
हुज दशमीते बहुफल होई,  
सकल मनोरथ पुरवै सोई ।  
तीज अथोदश करिय न बासा,  
ताघर होबए भोग विछासा ।  
चौठि चतुर्दशी छाएव छानी,  
ताघर होयत बालक हानी ।  
पाँचे साते तिथि आगाधा,  
गाय महिसि धुरन्धर बान्धा ।  
छठि आबैं छाएव नर जोई,  
स्त्री मरय बहुत दुख होई ।

नवमी कहए इअह व्यवहारा ;  
सो नर खइलें सदा उधारा ।  
एकादशी द्वादशी छाएव जहिआ ,  
ता घर काळ भुजंग मरैआ ॥  
दशे पुरुष की दशे नारी ,  
सो घर रहिजें सदा डजारी ।  
कहहि “डाक” जौ तिथि नहि पावी,  
ओरिसैं घर बर वैसि गमावी ॥  
पन्द्रह तीसैं छाएव छानी,  
ताघर होयत राजा कैं हानी ।

घरक समीप अशुभके वृक्ष कथन—

सिमरि तेतरि ओ पुनि तार,  
तूति डूमरि अरु बट विस्तार ।  
जामून अड़िरी गाछ जौ होए,  
“डाक” नाशए पुनि सोए ।

शुभाशुभ वृक्षक फल—

सदन समीप नारिअल होई,  
गृह बहुत धन पावए सोई ।  
घर क ईशान पूव ओ पावए,  
ताके घर बहु पुत्र बढ़ावए ॥  
पूरव दिशा आम यदि होय,  
धन दायक ‘डाक’ कहए सोय ।



—तीस—

बेल पनस बदरी भर नेह,  
 पूरव रहने प्रजा बड़ येनू ।  
 इपह सब वृक्ष दक्षिण जो होय,  
 अन धन लक्ष्मी बढ़ायण सोय ॥  
 जामुन दाड़िम पूरव आशा,  
 बन्धु कहत ताके पर मासा ।  
 घर के दक्षिण इपह तरु जो होय,  
 ताके बहुत मित्रकर सोय ॥  
 दक्षिण पछिम पूगी होय,  
 ताके बहुत हथ सोय ॥  
 जो ईशान दीश ई तरु होय,  
 प्रजा बड़व बहुत सुख होय ।  
 चम्पा तरु पूरव जो होय,  
 अन धन लक्ष्मी बड़ होय ।  
 तुम्बीफल अरु कर्कोर,  
 कुम्हड़ भण्डा सब दिश चार ॥  
 लता समीप सदन के होय,  
 कबहुने दुष्ट बढ़ायण सोय ।  
 वनमँझार जे होय अनेक,  
 बिटपने रोपीअ करी सविधेक ॥  
 सदन समीर बिटप बट होय,  
 धन ताके तरकर नित खोय ।

—एकतीस—

सोई तरु पुनि नगर मझार,  
 ताहि मुखद कह "डाक" गोआर ॥  
 घर समीप सीमर मुख मूल,  
 तेतरि नाशय धन केर मूल ।  
 पुत्र नाश करी भीख मँगायण,  
 सयनो कहिओ मुख ने देखायण ॥  
 सिरिस अशोक कदम्ब मुखदाई,  
 हरदी अशरख परम सोहाई ।  
 हड़ीइ आओर आमल कीरोऊ,  
 शश्व वृद्धि ताके घर होऊ ॥  
 आर्गो केरली पाछो मान,  
 वनिता वैसधि मँक दलान ।  
 पूरव सूतधि पीड़ा पादि,  
 एकसर की कर भुली बिलाड़ि ॥

त्याग्य वस्तु—

गोड़कट खाट उटफन छाड़,  
 नारि कुलच्छनि चाकर चार ।  
 ई चारु के तुरंत परिहरी,  
 तुम्हा बाहि फकीरी करी ॥  
 शनि रवि फड़की मंगल खाट,  
 ई सीनू ताकय स्वर्ग क बाट ।  
 कपटी मित्र कोशलिआ माय,  
 बुद्धिबक चेटा टेटा जमाय ॥

—बत्तीस—

कहहि "डाक" बारू परिहरी,  
बुद्धिबक सन शशुरो नहि करी ॥  
महतम सो भेल बहिया बरी,  
कहधि "डाक" जे सन्तापहि मरी ॥

सर्वेन क प्रसंग—

खयलहुँ मरी चितु खयलहुँ मरी,  
कहधि "डाक" जे सर्वेन करी ॥

॥ इति गृहस्थ प्रकरण ॥

००००

—खेतीक प्रकरण—

बडर खेवाक प्रसंग—

धुरि धुरि आ दीपक घर जमा,  
बारह वर्ष बडद रह तहामा ॥  
तादा बडद बेधि कए,  
दूई धुरन्धर कीन ॥  
अपन खेती करि कए,  
आनके मँगनी दीन ॥

तादा बडद बडुरिआ जोई,  
नाहि घर बसए न खेती होई ॥

—तेत्तीस—

हलचक्र—

जानि न खता रबिकर बासा,  
तासौ तीनि दियो हरजासा ।

बृषभ बिनाश उपजए नहि धान,  
पटाएव कि आनन्द किसान ॥

लगना तीन उपज नहि चास,  
बहु विधि लाभ पंच कह आस ।

पलधा तीन तीन कहए आनन्दा,  
तीनि मेडादेव सभ सोएन्दा ॥

करहा तीन उपज नहि धान,  
जोएव राई जे आन किसान ॥

पड़िया बडे धुरन्धर ३ठि आठे हर जाय,  
चौदह चौठि अमावस अयलो हर बिठाय ॥

साते पांचे तितिया दशमी एकादशि मे जीव,  
एहि तिथि हरके जोतिष ताहि प्रसन्न हो शीव ॥

स्वारो हउ पू पू तेऊ तुशु चंगु बार फहेउ,  
एठपासा तिथि हेऊ खेती करवाक "डाक" फहेउ ॥

बुध बरवार, बिहने बीज, शुक्र हर जोतवह नीज ॥



—चौतीस—

याहि नखत्रा उगी सूर,  
सासो आठ परिहर दूर ।  
बारहम सोइहम धीसम बारि,  
शेष नखत्रा परिहरि बारि ॥  
सर्व युक्ति सौ जाणव खेत,  
उत्तर दीश सैं धरव सचेत ।  
बड़दा जोतव ठीक (ठाढ़) कए,  
लागन धरव दड़ कए ॥

बड़दक चेशक फल—

बड़दा मूले खेत बड़ाए,  
खसै खेत जो बड़द पड़ाए ।  
गोड़ा भाड़की मुड़ाभाड़,  
तौ नहि नीक जो खसै कार ॥  
ईशा दूदए सून हो फोर  
लागनि दूदए बड़द लए चोर ।  
जूथठ दूदए तो शुभ होए  
जो बैसे कुदे लादे गोय ॥  
तत जानी कषी भल होय  
“डाक” कहै छथि निश्चित सोय ।  
खुर सिंह सौ माटी लीए  
बहुत सुख की मानहि दीए ॥

—पैंतीस—

खेत जोतवाक—

ऊँचे नीचे करी बास,  
भाई भतीजे करी बास ।  
से छाड़ि कए करह पचास,  
बड़दे कटतहु बड़दक घास ॥

थोड़क जोतिह अधिक मइयथिअह ऊँच क धनिहइह आदि ।  
जो खेत तैखो नहि उपलहुँ “डाक” सैं परिह गार्ह ॥

झोट झोट घर बान्ही चौघरा,  
नामे फार जोतवी हरा ।  
थोड़े थोड़े बेचि क किनथि भाछ,  
ताहि घर लक्ष्मी खल खल नाच ॥  
सौ छाड़हुँ अरु करह पचास,  
नीच ऊँच क जोतह चास ।  
नितह खेती दोसरक गाय,  
जे नहि देखथि तकरे जाय ।  
घर बैसल जे बनवथि बात,  
देह मे बख ने पेट मे भात ॥

धान पोषाक—

पुण्य पुनर्वसु पेलिबह धान  
मय असरेसा काशी खान ॥

—छत्तीस—

रोपवाक—

काशी कुशी चौड़ी चान,  
आब की रोपवह खेत में धान ।  
भारे बीजा बोके धान,  
आवहुँ बैसह घर किसान ॥  
आपाइ रोपी तान बितान,  
सावन रोपी नविके धान ।  
भादव रोपी ककोडाक बान,  
तीनू काठी एक समान ॥  
बापे पुत्ते करी चास, बापक मुहलें माइक आस ।  
आनक संगे करी ने चास, ने हो अन्न ने गाभरि वास ॥  
(इति सामान्य प्रकरण)

००००

वर्षफल

साओन कृष्ण एकादशीक—

साओन कृष्ण एकादशी,  
रोहिनि जेतो होय ।  
तेतो समया जानिए,  
खड़ी घसए नहि कोए ॥  
तिथि बढ़ए तो धान नशावए,  
नत्तत्र बढ़ए तो धान उपजावए ।

—सैंतीस—

तिथि नत्तत्र होयए समतुल,  
पुइमो उपजए तुलम तुल ॥  
कृत्तिक होयतहु कटिमाटि, रोहिनि होय सुकाल ।  
जौं सुगशिरा आवि पड़ए, पड़ए अचानक काल ॥

साओन शुक्ल सप्तमी—

साओन शुक्ल सप्तमी,  
धूपिके ऊगहिँ भानु ।  
तीं छनि मेघा बरिसए,  
जौं जनि देव उठान ॥  
साओन शुक्ल सप्तमी,  
रेनि होहिँ मसिहारि ।  
कहए “छाक” सुन भौंडरी,  
पर्वत उपजए सारि ॥  
कर खेती पिया भयन मे,  
होय निचिन्त रहु सोय ।  
साओन शुक्ल सप्तमी,  
रिमिभिमि बरिसए बारि ।  
मुवहु पिया निचिन्त भय,  
बन्धए ने सारिक आरि ॥  
साओन शुक्ल सप्तमी,  
जौं बरिसए घहराय ।



सा लनि मेघा बरिसहिं,  
पुहमी धूरि मेढाय ॥  
साओन शुक्ला सप्तमी,  
छपि केँ उगधि भानु ।  
मूसिन पूहय मूस सँ,  
कहाँ करव खरिदान ॥

साओन पड़वा भादव पुरवा,  
आसिन बहए ईशान ।  
कातिक कन्ता सिक्कियो न डोलय,  
कहाँ के रखवह धान ॥  
साओन पड़वा बह दिस चारि,  
चूहिक पौछा उपजए सारि ॥

साओन शुक्ला सप्तमी, जेँ गजें आधाराव,  
तेँ जाहु पिआ सालवा, हम जाइव गुजरात ॥  
साओन शुक्ला सप्तमी, ठह ठह रैन करन्त,  
की जल भेटए गंगतट, की तिय कूप भरन्त ॥  
साओन शुक्ला सप्तमी, लुक दय उगए सूर,  
हाँकहु पिआ हरदा बरदा, वर्षा गेल बड़ी दूर ॥  
साओन शुक्ला सप्तमी, निर्मल चान उगन्त,  
की जल मिलए समुद्रमे, काभिनि कूप भरन्त ॥  
साओन शुक्ला सप्तमी, मेघ न छाजए रैन,  
कहहिँ "ढाक" सुन "मौडरी" वर्षा हो गेल चैन ॥

साओन शुक्ला सप्तमी, गगन स्वच्छ जेँ होय ।  
कहहिँ "ढाक" सुन "मौडरी", पुहमी खेती होय ॥  
कंकड़ भीजहिँ कंकड़ी, सिंह उवारय जाए ।  
कहहिँ "ढाक" सुन "मौडरी", कुत्ता अन्न न खाए ॥  
कंकड़ सुखाइ कर्कमे, भीजए सिंह सिधार ।  
अन्न महगता मे कहहिँ, सुन्दर "ढाक गोडार" ॥

आदि ने बरिसव आदरा, अन्न ने बरिसव निदान ।  
कहहिँ "ढाक" सुन "मौडरी", किसान होयत पिसान ॥

सोम शुक अरु बीफे वार,  
बुध अमावस पूस मङ्गार ।  
खेती कय नर सोवहुँ जाय,  
उपजए अन्न हर्ष माहि छाव ॥  
रविसा रवि सुत ओ अंगार,  
पूस अमावस कहल "गोआर" ।  
मूल विशाखा श्रवणा पुरवा,  
ई जेँ होम अमावस परिधा ॥  
अपन अपन घर चेतहु जाए,  
रतक मोलें अन्न बिकाय ॥

शाके सन्धन् वर्षा बिधा, जोड़ि करी एक ठौर ।  
सातक भागे भाजिए, जे किछु बाँचए और ॥  
एक छक्के सम करि जान, सुन पड़य तौ काल बखान ।  
जेँ बाँचए दूई चारि, महगी अन्न बेशादे भारि ॥  
सीनि पाँच जेँ बचि जाय, मॉटिक मोलें अन्न बिकाय ॥

—चालीस—

पश्चिम बहए तृष्टिँ उपजावए,  
सम्पत्ति प्रजा बहुत तब पावए।  
उत्तर बहए धान्य बहु होई,  
ईशान अनाशुष्टि कर सोई ॥  
शनिवार जौँ रवि परवेश,  
धान नाश कर उजड़ए देश।  
मंगल दिवस अग्नि भय होय,  
गुरुवारहिँ पुरहितहिँ खोय ॥  
बुध परिवेश वृष्टि बहु होय,  
शुक्रहिँ अन्न बढ़ावए सोय।  
रवि अरु सोम प्रजा दुख पावए।  
परिवेश क फल "डाक" इण्ह नावए ॥

रवि कुज शनिहो संक्रान्ते, राजा अग्नि घोर भयमौति।  
बुध चन्द्रहिँ जौँ हो संक्रमन, सस्तीकहयान शोभीतजन ॥  
गुरुशुक्रवासर जौँ हो परवेश, धन्य वृद्धि सौँ "डाक" न कलेश।  
दिनमे मेघ रातिमे तारा, बहए "डाक" जे वर्ष मोल मारा ॥  
शनि मंगल जौँ हो शिवराति, पड़वा बह जौँ दिन खो राति।  
घोड़ा रोड़ा टिट्टीजौँ उड़ए, राधा मरण की परती पढ़ए ॥  
जाही होवए देश बेदा, ताहि चुमावी गाय।  
ताही होवए दोलाधोली, पुहमी करत खोटाए ॥  
रवि शनि मङ्गल धारकें, स्वाती नक्षत्र जौँ होई।  
दीप मालिका ताहि दिन, छत्र भंग फल जोई ॥

—एकतालीस—

गर्भ अवण बहु तियकें, पर्वतहुँ गिर जाहिँ,  
युद्ध उपद्रव बहुत विध, रोग बहुत तब माहिँ ॥  
स्वाती जौँ दीक्षा वरए, विशाखा खेळए गाय।  
नर अथर्वे जू भर्से, अन्न महत्त्व भय जाय ॥  
दीप जलए स्वाती दिन, गोधन होए विशाख।  
निश्चय जानहु "डाक" कहह, नाशय उपजय शाख ॥ पाठान्तर  
फागुन पूनो दिवस मे, होली दाह जौँ होय।  
वायु बहन के फल कहह, परम विचारे सोप ॥  
पुरिवा बहए परम मुख पावए, राजा के मन मोद बढ़ायए।  
दक्षिण बहए परम दुखदाइ, उजड़ए प्रजा महगी भदि द्वाइ ॥  
पच्छिम पवन बहए यदि सुन्दर, समय प्रजा भरिपूर वसुन्धर।  
पवन पूर्व यदि बहए सुहाई, किछु वर्षा किछु रौरी जाई ॥  
वायु दक्षिणी धनकर नाश, धान नष्टकए उपजय वास।  
उत्तर पवन बहए भड़िकागिय, पृथिवी पानी अनरख पाड़िय ॥  
"डाक" कहए यदि चारु वायु, नृपति प्रजा सब जीव जरायु।  
बहए वायु अकाशे आव, महि सर्वत्र संभाम कराए ॥  
मास अषाढ़ पूर्णिमा गमना, ध्वजा बान्हि के देखह पवना।  
मूरव सौँ जौँ वायु चलआवय, उपजय धान मेघ भड़िलावय ॥  
दक्षिण सौँ बह मलयानील, मध्य समय जू भर बलधीर।  
पड़वा बहए नीक कय जानव, अति उल्लास किछुए भय मानव ॥  
उत्तर सौँ उपजए धन धान, धान पान सब खाय किसान।  
जौँ ई ध्वजा रहए प्रमदछा, पड़ए अकाल होलए सब खण्डा ॥



बुद्ध राजा मन्त्री कान, अन्नक मुखें चलन उतान । (सुतन पा०)  
शनि राजा मंगल मन्त्री, नहि हो धान ने होयप यन्त्री ॥  
एक राशि छथो गरहक भोग, ताहि वष बहु पीड़ा रोग ।  
कहए "डाक" ई गोलक योग, युद्धक कारणा इन्हुँ कोँ भोल ॥  
चैत ज्योदशी शनिक योग, नहि हो अन्न "डाक" केँ भोग ।  
पाँच सूरजहिँ मास तुलाय, ताहि वर्षमे "डाक" लजाय ॥  
की अति रौंदी की अति वृष्टि, की अति तृण अति मङ्गल सृष्टि ।  
फाल्गुन मंगल होए पाँच, पुसहु मे पाँच कुवड़ा (?) नाच ।  
काल पढ़ए तेहि सालहि घोर, "भौँदरी" सुनइ बात मोर ॥

(१) कुवड़ा = शनि

इति वर्षफल

## अथ वर्षा प्रकरण

मेघगर्भ

पूसक अन्हरिआ जसदिन मेह, साओन सुदि ततदिन जलदेह ।  
माघ सुदि जत दिनमे जान, साओन ततदिन वर्षा मान ॥  
माघ वदि मे मेघ देखाय, भादव सुदि तत वर्षा आय ।  
फाल्गुन सुदि जौँ बादर देख, फाल्गुन सुदि ने "डाकक" लेख ।  
चैत सुदि जौँ मेघ लाग, आसिन वधि कातिक सुदिमे भाग ॥  
जेठ सुदि अष्टमी सँ देख, चारि दिन मन्द धायुक लेख ।  
नगन सुन्दर घन देखल जाथ, मेघमे गर्भ कहहु "डाक" बुझाय ॥

दशतारक

मूल आदि भरणी केर अन्त,  
चन्द्र बारहैं गर्भ कहन्त ।  
फारी घटा गगन मे छावए,  
बहाए पवन जौँ वृष्टि नहि लावए ॥  
ओ दशतारक नीक कहावए,  
वर्षा कयकें अन्न बढ़ावए ।  
जौँ दशतारक वर्षा होअ,  
गुहमी पुरि छोटावए सोअ ॥

मास विचार

कातिक सुदि एकादशी, बिजुली मेघ होए ।

"डाक" मास आषाढ़ मे, अति धरपा जल होए ॥

शनि रवि मंगलवार केँ, कातिक अमावस होए ।

आयुष योग पढ़ए पुनि, स्वाती तत्तत्र जौँ होए ॥

काल पढ़ए तेहि देशमे, अरु, बर, लोक नसाए ।

कहत "डाक" सुन "भौँदरी", बुरहु सगुन इहह आए ॥

कातिक सुदि पुनेकें भौँदी, नक्षत्र कृत्तिक जौँ पड़ि जाहौँ ।

तादिन हो संयोगहि बादर, पुनि पुनि बिजुली चमकय सादर ॥

मास चारि वर्षा केँ सुनइ, भलीभौँति वर्षे मन गुनइ ।

कातिक मास जौँ दससे मेह, जयदिन साकर सुनहुँ खेह ॥

सो मेघ बरिखए आषाढ़, सुन "भौँदरी" कहए "डाक" गोआर ।

अगहन यदि तिथि अष्टमी, जों मेघ दर्शत ।  
ओ मेघ साओनि भरि, कहए “डाक” बधत ॥  
अगहन सुदि एकादशी तिथि, द्वादश कालिक राति ।  
पौष पंचमी आर सुनू, माघ मासमे साति ॥  
ईसव दिन यदि मेघ देखी, चारि मास वर्षी अते पेखी ।  
पौष अमावस यदि पड़य, सोम शुक्र गुरु दिन ।  
जल वरषय बहु अन्न हो, प्रजा सुख हो रिन ॥  
पौष अमावस यदि पड़य, शनि रवि मङ्गल दीन ।  
“डाक” अन्नमहगी होषए, जलविनु तलफय मीन ॥  
पौष इजोड़िया सप्तमी, अष्टमी नवमी वाज ।  
“डाक” जलव देखय प्रजा, पूरय सब विशि कोज ॥

पौष वदी सप्तमी तिथि मोंही, विनुजल बावल गर्जत आँही ।  
पूनी तिथि साओन के मास, अतिशय वर्षी राखहु आस ॥  
पौषवदी दशमी तिथि मोंही, जों वरषय मेघा अधिकोंही ।  
तों साओन यदि दशमी, हरसय, ओ मेघ पुहमी बहु वरषय ॥  
रविआ रवि सुत ओ अंगार, पूस अमावस कहल “गोआर” ।  
अपन अपन घर चेतहु जाय, रत्नक सोल अन्न विकास ॥

पानी बरसय आधा, पूस, आधा गेहुँ आधा भूस ।  
पौष अमावस तिथि विषय, होषए मूल नञन ॥

आरु वायु बहए पुनि, सुनले हओ गृहस्त ।  
बोंधो अपनी ओपड़ी, निश्चय लो मनमान ॥  
वर्षा अतिशय हो मही, कहए “डाक” परमान ।

माघ वदी सप्तमी के ताहि, जों विजु बरषय नम भाहि ।  
माघ बारहु वरषे मेह, मत सोचहु चिन्ता तजि देह ॥  
माघ सुदी पड़िया के समय, दमकय विजु गरजय बह ।  
तेल अरु सुरही दिन-दिन भार, महगी होषए “डाक” गोआर ॥

माघ वदी तिथि अष्टमी, दसमी पूस अन्हार ।

“डाक” मेघ देखी दिना, साओन जलव अपार ॥

माघ (१) वरिसय तीनिलय, गेहुँ गाय बैमाय ।

माघ द्वितीया चन्द्रमा, वर्षी विजुली होए ।

“डाक” कहथि सुनइ नृपति, अन्नक महगी होए ॥

माघ तृतीया सुदिमे वर्षी विजुली देख ।

“डाक” कहथि अओ गहूम अति, महग वर्द दिन लेख ॥

माघ सुदीक चौथमे, जों लागय घन देख ।

महगी होषए नारिअल-रहए न पानहि शेष ॥

माघ पञ्चमी चन्द्र तिथि, बहए जों उत्तर वाय ।

तों जानहु भरि भाद्रमे, जल विनु पृथिवी जाय ॥

माघ सुदी षष्ठी तिथि, यदि वर्षा नहि होए ।

“डाक” कपास महगी, मिलय राखए ता नहि कोए ॥

माघक गरमी जेठक जाइ, पहिला प्राती भरि गेल ताल ।

कहए “डाक” हम होएय योगी, कुआँक पानीए घोषए ओवी ॥

सोमवार दिन यदि पड़य, माघ सुदी तिथि सात ।

“डाक” नृपति सँह युद्ध ताहिँ, प्रजा काल मुखजात ॥

अन्न महग जानहु हे सीत, माघ मासमे खसए न सीत ।

(१) माघक बदरी तीनि खाए, गाय गहूम बैमाय । [पाठान्तर]



फागुन सुदि तिथि पञ्चमी, शनि मंगल दिन होय ।  
“डाक वर्ष” महती पड़ए, बीज न छीटय कोय ॥  
फागुन अमावस मंगलवार, अन्न संयोगे मन्दि विचार ।  
अवस अकाल पड़य तेहि वर्ष, कहए “डाक” तेजहु मन हर्ष ॥  
सुदि फागुनक सप्तमी, नवमी तिथि अरु अष्टमी ।

ता दिन मध्या जेँ मेघा गर्जे, तो अकाल जानहु तू सर्वे ॥  
चैत मास यदि तपय जाए, नहि मेघ नहि बिजु देखिए ।  
बहए न वायु अँधेरी पाख, ताकर भल इमि “डाकहि” भाख ॥  
समय होअ शुभ वर्षा होए, राजा प्रजा सुखी सौँ सोए ।  
चैत अँधरिया पड़िया देख, जौन बार ताकर फल लेख ॥  
रविवार तोँ आँधी बहए, मंगल बिमल बुद्धि कहए ।  
बुधवार हो फाल जनावण, शनिवार बहु विपदा लावण ॥  
सरवर नदी कूप नहि पानी, मानुष चौपद मृत्यु बखानी ।  
हाहाकार सकल दिश जानू, शनिवार के इएह फल मानू ॥  
चन्द्र शुक्र वृहस्पति बार, दुष अन्न से भरे भण्डार ।  
चैत वदी पड़िया फल इएह, सुनलहु जा “डाकहि” कहइ ॥

चैत्र सुदि अष्टम नवम, वर्षा बिजुली जोए ।

जा दिशि अइसहु देखहु, ता दिशि काल पड़ए ॥

चैत अमावस पत्रा देखहु, सूर उदय से जै पड़ी पेखहु ।  
ते ते सेर बिकाहीँ धान, कालिकमे “डाक” बखान ॥  
चैत मासक दशमी सुदी, बादर बिजुली देखहु यदी ।  
जाकर फल इएह नीक होए, एहि बिहद फल शुभ लेहु जोए ॥

वैशाख

बाबर जेँ वैशाख मे, देखि पड़य पचरङ्ग ।  
अथवा मेघा वर्षहीँ, चमकए बिजुलीके सङ्ग ॥  
तो चौमासा वर्षहीँ, मेघ मही पर जान ।  
साओन मे उपजए चनो, नाज अनेक विधान ॥  
होहि अमावस जेँ शनिवार, अरु रविवारके करहु विचार ।  
छत्र भंग राजनके होई, “डाक” अवल देखा सब कोई ॥  
सुदि वैशाख एगारह बारह, अरु तेरह जेँ बादर छारह ।  
अरु बिजुली चमकए बहु ताहि, राज उपद्रव हो महि मौहि ॥

जेठ मास अँधियारी पाख,  
ता मह पड़िया कर फल भाख ।  
चैत मास पड़िया फल नइसन,  
“डाक” कहए एहु केर फल तइसन ॥  
जेठ वदी दशमी तिथि पेंखहु,  
शनिवार के जेँ इएह लेखहु ।  
वर्षा पुहमी पर नहि कोई,  
धिरले जगमे जीवण कोई ॥  
पौख वदीमे मेघा धमकय,  
अरु बिजु ता से चमकय ।  
बचय थोड़ चौपद बहु मरहीँ,  
“डाक” एकर फल अएसहु भएहीँ ॥

सूर्य आसा जहि ठाम, जेठ अमा सन्ध्या समय ।  
राखहुँ मनमे ध्यान, जेठ सुदी दुनिया तलफ ॥

दुनिया के चन्दा उगए; रवि ते पश्चिम मन्द ।  
उत्तर ऊँचो होइकेँ, दक्षिण नीचो चन्द ॥  
उत्तम फल जाकर लखो, समय होई अति नीक ।  
दक्षिण ऊँचो अरु उत्तर, बीच "डाक" नहि ठीक ॥  
जेठ पूर्णिमा दिन मे, पत्नी लोटए धूर ।  
कहए "डाक" तेहि वर्षमे, वर्षा हो भर-पूर ॥  
जेठ पूर्णिमा रातिमे, मेघ भयानक होए ।  
किछु किछु पछवा संचरण, महाधुष्टि कर सोए ॥  
जेठ सुदि नृसीया माँहि, आद्रा कछ मेघ वर्षाहिँ ।

तेँ दुर्भिक्ष पड़तहएहि साल, कहए "डाक" हो प्रजा चेहाख ॥

माघ अन्हरिआ सप्तमी, घन बिजुली हमकन्त ।  
द्वादश मास बरषय जलइ, जटा कटा बहुसन्त ॥

जेठ मास जेँ सूर्य तपावए, ।  
उष्ण वायु बहु रजहिँ उड़ावए ।  
घनहुँ मेघ थरपए महि माहिँ, ।  
जेँ पृथिवीमे नहिँ समाहिँ ॥  
जेठ मास जेँ तपए न मूर, ।  
शीत साधमे पड़ए न पूर ॥  
उपज थोड़, थोड़ जल होई, ।  
कहत "डाक" मानहुँ सख कोई ॥

आद्रादिक दशम्वर, जेठ सुदी मँह जेँ तपए ।  
तेँ भागए दुर्भिक्ष, चारहुँ भास वर्षए घनए ॥  
जेठ अन्हरिआ शनि दिन, जेँ न साधमे होए ।  
पानि न बरिसए मही पर, "डाक" न जीवए कोए ॥

आषाढ़

बदि आषाढ़के प्रतिपदा, यदि मेघा गर्जन्त ।  
पृथ्वी पर मानव लड़ए, निहचे काल पड़न्त ॥

अकर वनल आषाढ़, तकर बारह मास ।

आषाढ़ बदि एक अकाश, गरजय विजु वायु प्रकाश ॥  
तेँ खेती करहु मति कोई, साओन भावहु सूखा होई ।  
रोहिन हो दशमी तिथि माँही, तब ही सरवा धान बिकाही ॥  
सुदि आषाढ़ बुध के, शुक्र उदय यदि होए ।  
होय अस्त साओन विषय, महा काल पड़ितोए ॥  
साओन बहए पुरबैआ, वैश्व वरदा कीनह नैया ।  
चौठ अन्हरिआ साआन माँहि, जेँ महिपर मेघा वर्षाहिँ ।  
पेतालिस दिन घन बरसए, साख सचाई बड़ए भन हरषए ॥  
साओन पञ्चमी बरिसए मेघ, चारिमास वर्षा नित तेह ।  
सबे सोहावन हर्षित रोइ, "डाक" करी नहिँ किछु सन्देह ॥

साओन अमावस परहि जेँ, सामवार मे आए ।

उपज अन्न हो थोड़हि, दाहाकार मचाए ॥

कहुँ बरिसए कहुँ सुखहि, मरए जगत बहु लोग ।

फल जाकर कह "डाक" इनि जपसे व्योतिष योग ॥



भादव सुदि पञ्चमी मोंहि, स्वाती रिच संयोग हो जाहि ।  
दोऊ शुभजग मङ्गल करण, सुखी लोक सब कर दुख टरण ॥  
भादोमे भरणी जव होइ, घटाटोप मेघा नभ जोइ ।  
तव जानहु वर्षा सब देश, "ढाक" सुखी जन मिठय कलेश ॥  
आश्विन अमावस हो शनिवार, खरधर समय होए विचार ।

दक्षिण लौकालीकहिं, उत्तर गरजए मेह ।

कहहिं "ढाक" सुन "मोंडरी" ऊँच कय किल्लादेह ॥

मेघ सिंह धनु अग्नि करए वृष, कुम्भ कन्या माटी भिजए ।  
मिशुना तुला वह पयना, कर्क मीन शुक्रिक जल भरना ॥  
कार्तिक द्वादशि मेघादिशए, ताहि दिशा आपाव बरिसए ।  
अगहन पंचमी मेघ घटा, भरि साओन कौन मेठा ॥  
पूस अमावस मेघाकार, बरिसए भादव धौआँ धार ।  
माघक सप्तमी मेघ बदरिआ, चार मास बड़जल धरिआ ॥  
ई सब जाँ एको न देखय, मेघ रसातल मे चल जाय ।  
कहहिं "ढाक" सुन "मोंडरी", मानुष कुपहिं पैसि नदाय ॥  
जौं मेघा जल बरिसए स्वाती, सौं लहीन पहिरय सोनाक पाती ।  
वेद बिहित नहि होयए आन, तुल धिता नहि फुटए धान ॥

सुख सुखराती देव उठान, तेकरे तेरहे (१) करह नवान ।

तेकरे तेरहे खेत खरिहान, तेकरे तेरहे कोठी धान ॥

पानी बरिसय आबहिं पूस, आधा गहुम आधा भूव ।  
माघक रात्री जेठक आइ, पहिला पानी भरिगेल माल ॥  
"ढाक" कहथि जे हम होयवयोगी, कूपक जलसँ धोएत धौवी ।  
(१) बारहे (पाठान्तर)

जौं पहिले वैशाख मे जल, आँसुअहिं होयतहु दोमुन फल ।  
भादव चारि ओ आसिन चारि, अन्त आदि घाठ जोड़ी विचारि ।  
कहए 'ढाक' कराओक अपन, बोली भरि भरि राखब अपन ॥  
आ धरि रहथि बीचलक सूर, ता धरि अविग्रह यन मसूर ॥  
रानि रथि मंगल हो शिवराति, हड़हड़ पल्लवा यह दिन राति ।  
नदिआक तीरे तीरे करिअह चास, तकरहु रसिअह थोड़वे आस ॥  
पल्लवा यहिके बरिसए शीत, ऊँच जोति कए सुतहु निचिन्त ॥  
पहिल पवन पूरव साँ आय, बरिसँ मेघ आति झड़ी लगाव ।  
चमके पच्छिम उतरा ओर, सौं जनिअह वर्षा हो ओर ।  
पश्चिम दिश जौं हरिअर मेह, चमके बिजुली वायुन नेह ।  
वर्षा होअए मूसल ओर, सात दिन धरि 'ढाक' गोआर ॥  
जौं देखी कोहरिकटा मेह, ताहि बीच मे नातक नेह ।  
जाय खेतमे बागही आरि, "ढाक" कहै छथि समय विचारि ॥  
ने ओह दिन त प्रात दिवस, वर्षा होअए अधिक अवस ॥  
पच्छिम धनुषा होअए सुखा, पूरव देखावय जल लय आबय ।  
दूर मोंडरि लग जल, लग देखलें गेल रसातल ।  
जेत थर थर वैशाख पाथर, जेठक राति आकाश चरचक कर ।  
बढ़ितहिं वर्षा मेघवा भर, कहए "ढाक" ऊँच ऊँचकेँ घर घर ॥  
चन्द्र मोंडरि मे देखी तारा, वर्षा होअए मूसर धारा ।  
इन्द्रधनुष जौं पूर्वाहिं देखी, नीच ऊँच मे एके लेखी ।  
जे छन हो रोहिनि परवेश, पनपति इन्द्र धर्म जलेश ।  
जल परित घट रोहिनि परयन्त, कहए "ढाक" फल कही तुरन्त ॥



वनपति जल जो पूरन देख, परि सावन जल वर्षा लेख ।  
जब खाली तब वर्षा थोड़, खाली भएले गूढ़ विशेष ॥  
पूय दक्षिण पच्छिम घट जल, भादव आसिन कातिक फल ।

आवत हो नहि आदर किए जात न दीन्हें हरन ।

ई इन् तबहिं गय परिणत आ गिरहस ।

साध उपन वैराग्य जाइ, पहिले वर्षा भरि रेल जाइ ।

घोषी घोषण कूपमें पैसि, कहए "डाक" देहरि पर बैसि ॥

जेठ पूर्णिमा दिन में पर्जा छोटए धूर,

कहथि "डाक" तेहि वर्षमें वर्षा हो भरिपूर ।

जेठ पूर्णिमा रातिमें मेघ भवानक होअ,

किछु किछु पड़वा सञ्चरण महाबुधकर सांथ ॥

जेठ तपए अषाढ़ जयय ॥

शुद्धपक्ष ओ नवमी के धार, मास अषाढ़क कहओ विचार ।

भोर भड़ी सुखा करवावए, पहर तेसर धान कहावए ॥

मध्य भड़ी धान उपजावए, सूर्योदय मारी दिखलावए ॥

बीफे शुक्रक बादरी, रहए शनीचर डाय ।

कहए 'डाक' सुनू 'भौंडरी' बितु वर्षे नहि जाय ॥

शनि सतहिआ रब बतहिआ ॥

अषाढ़क पड़वा सोना बहए, सीक डोले मही भरए ।

रोहिनि लवए सुगशिरा तवए, आर्द्रा देल भुसुआए ॥

कहए "डाक" सुनू सज्जना, कुकुरो अन्न नहि खाए ।

धान पान के नित्य स्नान, कहए 'डाक' ई निश्चय जान ॥

अषाढ़ नवमी शुद्ध पक्षा, की कर परिणत लेला जोखा ।

वरिसए मेघ जो मूमर धार, भाँफ समुद्र में बगड़ा चार ॥

जो मेघ वरिसए फूँटोफूँटी, मलय वृद्धि हो 'डाक' कही ।

मन्द मन्द जो धरपत कर, अन्न वृद्धि सौ पहुँची भर ॥

सिंहक माथे पड़वा बहए, तकरहु मानिअइ डर ।

कहहि 'डाक' सुनू 'भौंडरी' ऊँच कय चान्हइ घर ॥

जो असरेसा गुगकी लावए, भवा तिरावे भाकू पावए ।

जो पूरवा पू बैसा पावए, सुखने नहिआ नाव बहावए ॥

साओन पच्छवा भादव पूरवा आसिन बहए ईशान ।

कातिक कन्ता सिक्किओ नहि डालय कहाँक रखवइ धान ॥

साओन पड़वा वह दिन बारि, बुद्धिक पाछो उपजए सारि ।

वरिसे रिमकिम निशिदिन बारि, काँह गेल 'डाक' वचन परचारि ॥

साओन पूरवा भादव पड़वा, आसिन बहए नैवृत्ति ।

कातिक कन्ता सिक्किओ न डोलय, उपजय नहि भरि धीत ॥

साओन पूरवा वह विकरार, कोही महुआक हो व्यवहार ।

खोजत भेटय नहि थोड़ी अहार, कहत बैन हएह 'डाकगोआर' ॥

जो साओन पुरवैया बहए, शाखी लागु करीन ।

भादव पड़वा जो बहए, होहि सकल नर हीन ॥

साओन वह जो बड़वहाला, बीआ काटि करह गे घासा ॥

॥ इति वर्षा प्रकरण ॥



## अथ गृहस्थधर्म प्रकरण

धन—

मंगल के ओ आरे पारे, केश कटावी कहि गेल गोआरे ।  
शनि मंगल के आरे पारे, केश कटावी कहि गेल गोआरे ॥  
केश कटावी बापे पूत, नहि कटावी बापे पूत ॥  
जहिखन भेटए जाड, तहिखन केश कटाड ॥

नव वस्त्र परिधान—

कपड़ा पहिरी तीनि दिना, बुध वृहस्पति शुक्र दिना ॥  
शनि जारए रवि फाड़ए, सोम करए सुडाह ॥  
‡ मंगल भारए जीव सोँ, बुध पहिर घर जाह ॥  
नैगटे पहिरी भुख लें खाई, जहाँ मन आवए सहाँ जाई ॥

नवाग्र—

पूर्वादे बीच राशि मे पाव, माघ फाल्गुनक शुक्र सोहाव ॥  
१। ६। ११। १२॥

कृष्णहुँ मे पंचमी धरि होय, नन्दा त्रयोदशि छाड़ए सब कोय ।  
सुन्दर तिथि, शुक्ररा छोड़िधार, सुदुचर क्षिप्र नक्षत्र आधार ॥  
जन्मक तेसर तारा हरिशयन; धनु तुल मे नहि करी नवान ॥

‡ कुन्दी के “सामगाना कृपाकर” वाक्य अछि तेँ मङ्गलकें दोष  
नहि थिक, ओ वाजसनेयी के रथि केँ दोष नहि थिक ।

—पंचपन—

नव वस्त्र—

‡ सुतव उठव पाँजर मोड़ा, ताहि बीचमे जन्मउ होँहा ।  
राजक बेटा रामलाल, आठ नवौमे 'ढाक' नैहाल ॥  
थतहाक चौदह बतहीक आठ, अन्न त्यागिकए जीवन काट ॥

मन्त्र-महण—

पैतहि दुख पैशाखमे सिद्धि, जेठ मरए आपाइ वन्धुनाशकवृद्धि ।  
साश्वत पुत्र भादव दुख देह, सर्वसिद्धि आसीन फातिक ज्ञानदेह ॥  
अगहन शुभ पूत ज्ञानक नाश, माघ मेघा फाल्गुन वितय प्रकाश ।  
कृष्णपक्ष पञ्चमी परशन्त, एहि सँ आगौं वाङ्मि अन्त ॥  
शुक्लपक्ष मे शिखर सिद्धि, शुभकारक द्रव्य कइओ वृद्धि ॥  
दु वी पा सा एस एगारह, कहि 'ढाक' ओ तिथि ओ बारह ।  
रिक्ता तिथि केँ छोड़वे करी, शेष तिथि मध्यम मानि धरी ॥  
अधिर मृग चित्र अनु ओ रेव वसु नक्षत्रें मन्त्र छद लेव ।  
शनि कुज छाहि सुन्दर शुद्ध काल, पंद्र तारा लय शिष्य बेहाल ॥  
सुन्दर दिन मे गुरु प्रवि जाय, मन्त्र लेथि कह 'ढाक' जनाय ।

मैत्री—

पुष्य चन्द्र मित्र भाग नखता, वृदश मे शुभ बार लिखता ।  
आष्टमी तिथि धिर होएव लग्न, मैत्री कएलें हो नहि भग्न ॥

॥ इति गृहस्थधर्म प्रकरण ॥

‡ सुतव = हरिशयन, उठव = देवोत्थान, पाँजरमोड़ा = पार्श्व परिवर्तन,  
रामनवमी, जन्माष्टमी, शिवरात्रि, महाश्वती ।

## यात्रा प्रकरण

उज्ज्वल वसवह पुल्लवह ककरा, कोन दिन कोन मुह करवह जतरा ।  
भदवा के नहि जाति ने पाती, दक्षिण उत्तर दूपहर राती ॥  
पुरव गोधुली परिचम उषा, कहहि 'डाक' जे सुखहि सुखा ।  
शनि रवि मंगल ओ गुरुवार, दक्षिण मयन करव सैवार ॥  
सोमे शुके बुधे वाम, एहि विधि लङ्का जीतल राम ।  
शनि मंगल भोजन कय चलवह, नैलहु लक्ष्मी पलाटि कय लयवह ॥  
सोमे बुधे शुके उषा, छावह जोतिषी लेखा जोखा ।  
जोइ श्वर चलए सोइ पद दीजय, काकहु सँ एक टकर लीजय ॥  
पक्षिषा नवमी शनि सोम श्रवणा, पृथ्व दिशा नहि करिष्य गमना ।  
अश्विनि पञ्चक वायु गुरु तेरह, ई सब जानि दक्षिण जनि तेरह ॥  
रवि छठि चौदसि भरणी पुष्य, परिचम के थाक इपह बढ दुखल ।  
कुम्भ दुज दशमी बुध ओ हस्ता, उत्तर गमने मरण अवस्था ॥  
कहहि 'डाक' गमन ने करी, नाशहि प्राण कोटि विधि धरी ।  
रवि मूले जे पाबी अङ्का, सोमे अवस्था वजाबी डङ्का ॥

गमन काल जौ वाम दिश, श्यामा बोलए भूप ।  
गोइ सूर अरु सर्प के, दर्शन परम अनुप ॥  
पुर पहुँठत जौ वाम ते, तीसर दक्षिण जाय ।  
कहए 'डाक' शुभ सकुन इएह, मिलिहँ सब मन भाय ॥  
वाम भाग मे बोलए गीहर मन वाञ्छित फल पावहुं शीघर ।

—सतावन—

संमुख दहिन जौ बोल निवार, दहीअशुभ कहए 'डाक' गोश्वर ॥  
निशा राति चहुँ दिशि जौ बोलए, अशुभक द्वार गुरन्ही खोलए ।  
रोगी रीझ सुनारक दर्शन, वामहि मलान दाहिन प्रशन ॥  
नीलकण्ठ केर दर्शन होए, मन वाञ्छित फल पावए सोए ॥

बोलए खरहा वाम दिश, मीठी वैन सुनाय ।  
फल यात्रा सब शुभ लखो, अन्न धन देहि निखाय ॥  
दाहिन बोलए भय करे, आगे रोगहि नाश ।  
पीछे बोलए गमन कर, तेजहुँ मन से आश ॥

प्रात समय सुगा बाँँ सँ, दाहिन जाइत होँ दरसए ।  
सौंफ समय दाँँ सँ बाँँ, मन वाञ्छित फल निश्चय पाए ॥  
दहिथा लौंग पक्षी विशेष, दाहिन प्रशन पुष्यदि लेख ॥  
वाञ्छित फल वरचण सब पावए, कहत 'डाक' इएह फल मनभावए ।  
चकुल मोर दर्शन शुभकारी, 'डाक' हे सज्जन लेहु विचारी ॥  
काकिल सुगी सुग्गा कहो, चौथे मैना सुनहुँ ऐ सही ।  
बाँँ बोलए तो शुभ होई, 'डाक' कहए मनमे लेहु जोई ॥

गमन काल मे खान यदि पटपटाय कान ।  
'डाक' कहथि जे प्राण बचए सूकर एवधे मान ॥  
मानव महिष मजार द्वय खान शुभ ओ कीर ।  
छड़व देख यदि मार्ग मे 'डाक' कहथि तो कीर ॥  
विष तीनि पुनि चूरी चारि शूद्र एक रस संख्यक नारि ।  
'डाक' बचन मन ई सुन धारि वैश्य दूई भाणहुँ सो मारि ॥

दहिषा = दही । लौंग = लवङ्ग ।



यात्रा काल नकुल यदि देखी नाराज काजकेँ सिद्धे पेखी ।  
गमन समय मे काक यदि वाम भाग मे देखी ।  
यश कार्य सिद्धि होए अमानित धन पुनि लेखी ॥  
गमन काल मे यहए बसात विघ्न बाधा सभे नसात ।  
सुन्दर शिशु युत युवती नारि भरल कुम्भयुत हो पनिहारि ।  
अथवा चेमकरी मृदुभाषी पुस्तक हाथ विप्र मुँह बासी ॥  
रवि कोकिल पुनि लावा ओ मोन, ई सब नहि छथि यात्रा हीन ।  
लगहरि गाय विशावधि बाझा, विघ्न होए सब बिसर पाझा ।  
'डाक' अपजानी ई देखि, शुभ यात्रा कहथि सब लेखि ॥  
चलत मार्ग मे तुरग मृग दहिन वाम से जाय ।  
'डाक' मनसि चिन्ता तजी धन यश वार्ता पाय ॥  
अजा एक अरु श्वान पट् वृषभ एक गज सात ।  
तीनि धेतु पञ्च महिस ते यात्रा शुभ न लेखात ॥  
प्रात वाम दिस तिरीर बाजए, पहर दुई तेँ दाहिन गाजए ।  
बचन मानि 'डाक'क बड़ भाई, गमन करी कुशल सोँ जाई ॥  
बलुआ कारी पक्षी श्वान, गर्दभ गोदर चापस जान ।  
सामहि भय 'डाक' जोँ चलए, धन यश इच्छा तीनु मिलए ॥  
मंगलक उषा बुधक प्रात, यात्रा करी 'डाक'क वात ।  
रवि गुरु मंगल उषा जातो, आन सयहिकौँ कुंठि मानी ॥  
सास नखला ओ तिथि धार, जत दिन तासक जोड़ि करी विचार ।  
जोड़ल अंक मे सातक भाग, शेष अंक फल कहथि 'डाक' ॥  
एक बाँचय तँ शुभ कहि दीअ, दुइ बाँचय तँ लाभ लय लीअ ।

तीनि बाँचय तँ शत्रुकै क्षय, चारि काज सिद्ध पाँच संशय ॥  
दूषो मे मृत्यु शून्य हो दुःख, नीको दितक यात्रेँ नहि सुख ॥  
सापक वीअरि स्त्रीक रज, बैद्य लवण देखि यात्रा तज ।  
अपन घर ओँ घदघद जर, झिझा हो या पाग खसि पर ॥  
कारी धान जोँ गुर्विणी कान, ई असमुन सब 'डाक' जान ॥  
रवि के पान सोम के दर्पन, मंगल किछु किछु धनिआ चर्धन ।  
बुध मे गुड़ गृहर्पात के राई, शुक कहए जे दही सोहाई ॥  
शनि कष्ट मोहि अदरक भाव, सकल काजकेँ जीति घर आव ।  
ने शुनि भदवा ने दिगुल्ल, कहथि 'डाक' ई अशुत समतूल ॥  
गामक ठकठक बासक धान, हाथ मुँह दए चिहवा कान ।  
ताहु सोँ जोँ भेटए मलहारी, की होइ राजा की अधिकारी ॥  
धामे फनिपति दाहिन सिआर दही लपट दहीलएह कहए गोआर ।  
लकरो आगोँ जोँ भेटए मलाह, देखि मोन करी परम उछाह ॥  
की होइ राजा की होइ दीवान, कहहि 'डाक' जे परम सुजान ॥  
बड़दा बनघर भरल बैल, बेशवा राजा देवता शैल ।  
कहहि 'डाक' यात्रा करु जानि, गेलहुँ लक्ष्मी देतहु आनि ॥  
भरती सँ खाली भञ्जा, ओँ जल भरने जाय ।  
कहहि 'डाक' सुनु मौजरी, यात्रा अति सुखदाय ॥

देवरीक छटछट नगरक बाँह चिहाकक कोइ महतारि कान ।

ताहु सँ आगोँ भेटए लेली, एक घेर नहि आगोँ वेली ॥ (पाठान्तर)



कनकट बुचकट काटल केश, बाट चलेत जों लागय टेस ।  
 केओ पूछए जायव कतए, भेला काज विनाशय ततए ॥  
 खाटक खटखट पुरुषक वान, बाट बैसल जों बुद्धि अकान ।  
 तोनि कोश पर जों भेटए तेलि, विषवा ब्राह्मणी मिलए अकेकि ॥  
 तापर भेटए बिप्र जों काना, जल देक धार वचए न प्राना ।  
 नग्न भग्न गुरुविणी जोई, खट ककसिआर जों आगों होई ॥  
 मुखे हाइलए श्वान जों चामए, कहहि 'डाक' जे मरगु देखावए ।  
 फुटल पैल ओ दुटल खाट, बाट चलेत व्यास काटल बाट ॥  
 यात्रामे जों खसए पाग, ई सब ताकथि स्वर्गक बाट ॥  
 जेत भिखारी गाम सराउ, फेरि पछडि अपन घर आव ।  
 काटल कपचल धकड़ल केश, बाट चलेत जों लागए टेस ॥  
 बामन मे जों भेटए कान, जललोक धरि वचए न प्रान ॥  
 वजड़ल वसवह जणवह कोन भाति, दिनमे पूरव पच्छिम राति ।  
 गोधुलि दक्षिण उत्तर ऊया, कहए 'डाक' ई सुखमसुखा ॥

॥ इति यात्रा प्रकरण ॥

### अद्भुत प्रकरण

कमल गाय चोटक गज साप, साबय सुन्दर भूमि पर आव ।  
 खल्लन बैसल देखी राज, 'डाक' कहति जे कुशल समाज ॥  
 भरमहि बैसल अरु नखकेश, भुस्तहि देखि ने दुःख कलेश ।  
 ऊपर देखने धनक बुद्धि, पूव कहै छथि कारज सिद्धि ॥

अग्नि कोन मे बहुभय होअ, दक्षिण देखने अग्नि उड़ोअ ।  
 नैऋति देखने मन्त्र विशेष, पश्चिम देखने धन अशेष ॥  
 सुन्दर वस्त्र सुगन्धित खल, वायव देखने ई सभ फल ।  
 उत्तर देखने सुन्दरि नारि, ईशहि मृत्यु कहहि पुकारि ॥  
 एहि विधि पञ्चोक बजथो जान, छिक्कुं न कह 'डाक' बखान ॥  
 दक्षिण छीके धन लए लीजए, नैऋत कोन सिद्धासन दीजए ।  
 पच्छिम छीके मीठ भोजना गेलहुं पलटए वायव कोना ॥  
 उत्तर छीके भान समान, सय सिद्धि लए कोन ईशान ।  
 पूरव छिक्का मृत्यु इतार, अग्निकोन मे दुःखक भार ॥  
 सपकेर छिक्का कहि गेल 'डाक', अरने छाकहिं नहि करु काज ।  
 आकाशक छीके जे नर जाय, पछाटि अन्न मन्दिर नहि खाय ॥  
 कार्यारम्भ मे छीके कोई, सुनकर मन्त्र विचारहु सोई ।  
 नापो पापरक छाया अपन, अंगुली से गिन लेहु मनेसन ॥  
 ता, मे तेरहु आओर भिलाव, तखन आठहि भाग जगाव ।  
 भाग देइकेर शेष जों बाँचए, कहत 'डाक' ताकर फल लौचए ॥  
 एक वचए तो लाभ बुझावए, कार्य सिद्ध हुइ मौइ जनावए ।  
 तोनि वचए तो होवए दानी, चारि रहए तो शोक बखानी ॥  
 पाँच रहए भयकोँ उपजावए, छओ वचए तो लक्ष्मी आवए ।  
 सात वचए तो दुःखहिं जानां, शून्य शेष सँ निष्फल माना ॥  
 पदछाया केर इएह विचार, सुन 'भौंड़रि' कह 'डाक गोआर' ॥  
 वृद्ध बाममे छिक्का सुनी, कुशल कार्य सब विद्धी सुनी ।  
 सन्मुख छीक कलह बढ़ाएव, दाहिन भित्तक नात कराएव ॥



अपन छीक सशसैं भयकारी, द्रव्य नाश विपत्ति दुखकारी ।  
सरदी सुँघनी बलक छिन्ना, 'डाक' कहथि ई सब फिक्का ॥  
पल्ली खसए जौं सरटा चढ़ए, एहि विधि फल 'डाक' पढ़ए ।  
मस्तक खसए तौं राजाभी होइ, भालहिं ऐवपर्य कइए सशकोइ ॥  
कानहि खसने भूपन लाभ, ओंखि पर खसने बन्धु मिलाए ।  
नाकपर खसने सुगन्धि देआवए मुखपर खसने मिष्टान्न खोआवए ॥  
कण्ठहिं श्री हो धावाधाइ, आहू पर खसने विभव बधाइ ।  
बाहुमुख मे होए समृद्धि, हाथ दुः पर धनक वृद्धि ॥  
स्तनमूल मे सुभ्र भाग, हृदयमे खसयतौं सौख्य सोहाग ।  
पीठपर खसयतौं पृथ्वी प्राप्ति, पोंजरहिं खसने बन्धु मिलाति ॥  
ढाँड़ पर खसयतौं लाभ होय वरन, मुखमे खसने सुख अवश्य ।  
जाँचपर खसने धनक हानि, गुदमारगहिं रोगभय आनि ॥  
ऊपर खसय तौं वाहन आव, जस्तुजंयमे धन चल जाय ।  
पाए पर खसने रटना होय, कहथि "डाक" एहि विधि फल होय ॥  
एहि पल्ली चढ़ नरतन जाय, सरट खसए जौं ओहि विधि आय ।  
फलहुक अलटा करितहुं जानि, "डाक" कहै छथि युक्ति बखानि ॥  
रातिमे जौं पल्ली चढ़ए, सरटक खसने "डाक" पढ़ए ।  
मरन निमित्तक होयए सोई, नहि तौं व्याधि अवश्य हाई ॥  
खमितहिं यदि ऊपर चढ़ि जाय, खसने नीक चढ़ए ने सोहाय ।  
छाया जौं दक्षिण दिश देखी, दुइ शिरछायाक देखने लेखी ।  
छाया देखी मुण्डविहीन, चन्द्र सूर्य दुइ राति ओ दीन ॥  
'दुन्' बिम्बमे छिद्र देखाय, उदय अस्तमे सुभल आय ।

पौन सोँ पकड़य अपन मे प्रेत, अथवा देखलहुं होअइ सचेत ॥  
रजपात होय जाहि घर, उलकापातहुं भासइ घर ।  
फल्गु मस्तक जो बर्धन होय, इन्द्रधनुष नाश देखल जाय ॥  
अमन्धरी जे देखथि नहि, माथहि भिट काक बैसु अपतहि ।  
देखी जौं ई सब उल्लास, करी पवित्र गंगाहि निज गात ।  
दश सात पौँच पन्त्रह दिन ओट, 'डाक' तकै छथि दक्षिण बाट ॥  
देवता आभनक पूजा करी, ताही पुण्ये बचबो करी ॥  
आधिक क्रोध होयए अति छर, से जम बर्षक पुरितए मर ।  
अचके मोट वा पातर देह, वर्ष यितैतें यमक मोह ॥  
देवता पाण्डव गुरु भूदेव, माय बाप जौं राजहिं सेव ॥  
एहि सातोक निन्दा कर, कहए 'डाक' वर्षहिं यमपर ॥  
हीपगन्धो अमन्धरी तारा, नहि छागए देखने बेचारा ।  
'डाक' कहए सुनु 'माँहरि रानी' जाधि यमकघर वर्षहिं मानी ॥

जन्म लग्न सैं गंगल सात, चन्द्रहुं सैं जनिअइ ई बात ।  
विधवा होइतिह सैं कुमारि, कहए 'डाक' ई प्रह विचारि ॥  
सातम सूर लग्न स जकरा, कहए 'डाक' पति छाड़ए तकरा ॥  
सातम शनिके पाप जौं देख, कन्या धरतहु लम्पट वेश ॥

‡ भूदेव = ब्राह्मण ।

† संस्कृत मूल -

दीपनिर्वाणः प्रपञ्चः सुहृद्वाक्यमकथ्यते ॥

न जिघृक्षति न शृण्वति न पश्यति गतायुषः ॥



काक चेषा विचार—

तनु अति कारी बढ़का लोल, पैय काक अति ऊँचे बोल ।  
ताहि काक केँ धामन जान, कहथि 'डाक' जे आन नहि मान ॥  
विंगल आँखि नील रङ्ग ठोर, सब देह कारी लुत्ती सोर ।  
पांडु नील रङ्ग चोच ओ देह, कहथि 'डाक' जे वैश्य कहि लेह ॥  
भसमक रङ्ग ओ दूर शरीर, करकर धाजए रह नहि थीर ।  
ताहि 'डाक' कह शूद्र पुकारि, एहिसेँ आन थीक अन्त्यज हारि ॥  
पाँचो जे मुख बामन जान, असगुन सगुन तकरे जान ।  
जो मांस चोकरए आगोँ आवि, कहथि 'डाक' जे धन पावि ।  
आगोँ लावय मँटिक देप, भूमि लाभ हो ताही खेप ॥  
रत्न आनि जो राखय अम, कहथि 'डाक' जे राज हो समग्र ।  
काक द्वार मे आबय जाय, कहथि 'डाक' जे पाहुन पाय ॥  
जूता छावा शस्त्र सवारो, छाया अंग नौचे काग कारो ।  
स्वामी मृत्यु देखावय काक, फुल चढ़ओने पूजित हो 'डाक' ॥  
असमय तीनि दीन सँ ऊपर, जाहि देश वर्षा हो भूपर ।  
देशक प्रधानक होय मरन, कहथि 'डाक' जाव ईशक शरन ॥  
आव राति जो असमय वृष्टि, ताहि देस मे इन्द्रक दृष्टि ।  
स्वर्गधाम केँ राजा जाय, कहए 'डाक' कप निश्चय भाय ॥  
असमय बरिसय करकर बादर, समय मे होय मेघवा कादर ।  
सकल प्रजागण रोगेँ पूर, भयक कारणेँ 'डाक' भेल चूर ॥  
प्रतिमा हँसए ओ मूने नैन, रोदन करए बाजए बैन ।  
धूर्मा ऊठए ज्वाला देख, अति भय होय देश मे लेख ॥  
अकल देव प्रतिमा मे जान, कहथि 'डाक' जे हाय नहि जान ॥

बिन कागण जो अंगक भंग, प्रतिमा चल तनु बामक सङ्ग ।  
नेत्र सँ नीर जो बुझना जाय, प्रतिमा बाजय मुनलौ जाय ।  
कहए 'डाक' निश्चय भूपाल, देशक राजा सरय बोधि साज ॥  
कुतुर विहारि जो धन जाय, बनक हरिना गाम देखाय ।  
गगनहि गीध धूमि के आव, भवन भीति बैसय सुख पावि ॥  
गद्दाक सन दुह नेताक रुपज, घोड़ा भँड़ा खचर अज ।  
अनेक रूपक मनुष विजाय, देव प्रतिमा खसल देखाय ॥  
जाहि देश मे ई मय उतपान, देश छाड़हि केँ भागद परान ।  
कहथि 'डाक' सब तरहेँ दुख, जोके खएतहु लोकक मुख ।  
कौआक बीचमे कुतुर बाज, राति दिन जो इएह समाज ।  
कहथि 'डाक' सुनु 'भौंछरि रानी'; ओहि देशमे भय अति मानी ॥  
मुख्य घरमे काकगन पएसल, चित्रविहिँ गिदरा मोरहिँ नएसल ।  
गगनहि गिद्धक भुण्ड भँडराय, अति भय 'डाक' केँ शीघ्र देखाय ॥

गोदर दिन मे बोलही, काग निमि मे बोल ।  
कहए 'डाक' पड़ए काल तब, निश्चय घर-घर डोल ॥

नेताक दन्त जगक प्रसङ्ग

पहिनाहि ऊपर जन्मल दाँत, बापहिँ खएतहु अथवा मात ।  
दाँत लेने जन्मए बाल, माय बाप ओ 'डाक'क काल ॥  
अबकेँ खाय अपनहुँ नहि बाँच, कहथि 'डाक' तौ बुझइ जाँच ।

इशान चेषा विचार

दहिन पाएर सँ श्वान यदि, अग्र निम्न कुड़िमाए ।  
छदर माथ अरु कण्ठ गुद, सुखद राज्य धन पावए ॥



हृदय नासिका कण्ठे युग, नेत्र पृष्ठ ओ भूमि ।  
फल सुखदाई हो एकर, "डाक" कहै छथि जूमि ॥  
उक्त अंग सब वाम पन, खजुआवय थवि श्वान ।  
फल जाती पुन अपशकुन, "डाक" कहाँ परमान ॥  
श्वान करए क्रन्दन जहाँ लोटए भूम पर जाए ।  
"डाक" कहाँ निरन्ध तहाँ आवए विपदा धाए ॥

॥ इति अद्भुत प्रकरण ॥

### ग्रहण

रवि सँ चन्दा सात मे, राहु सँ हो एकन्त ।  
तखन गहना लागिए, कथी लए खड़ी घसन्त ॥  
जाहि नखले रवि तपे, ताहि अमावस होए ।  
किछु किछु पहिना सचरए, सूर्यपव तब होए ॥  
एक मास जा दुइ गहन, घोर बुद्ध भूपति केँ तखन ।  
जखवपी नहि होवए साल, "डाक" कहै छथि सुनू भूपाल ।  
पहिले सूरज पौछा चन्द, गरहन्त लगलें "डाक" अनन्द ।  
पहिले चन्दा पौछा सूर, गरहन्त देखलें रोमे पूर ॥  
गृहपति घरनी कलह घोर, कहए "डाक" सुनू कहल मोर ॥

### प्रश्न प्रकरण

पुछनिहार ओताक नामाक्षर, तिथि दिन मास जत्तए एक कर ।  
रावणक मुहँ भाग करु, शेष अंक सँ फल उचारु ॥

सात पाँच शीनि मंगल धात, नखो एक मिद्धि हाथे हाथ ।  
छथो चारि मे कार्य विफल, दुइ आठ नाशेँ काज सकल ॥  
प्रश्नकर्ताक नाम जत अक्षर, जतथा मात्रा फराक कय धर ।  
अक्षर दोगुन चौगुन मात्रा, सय मिलाय करी एकत्रा ॥  
तीनि अक्षर सँ भाग कर देख, शेष बाँचए फलक लेख ।  
एके शीनेँ दुइ फल मे देर, शून्ये नाशेँ "डाक"क फेर ॥  
जत मास गर्भ नारिकें नाम, जत जन धैसल छथि ओहि ठाम ।  
ओहि अक्षर सय हो जत अंक, साते हरने बाँचए जे निरंक ॥  
'डाक' कहए एक दुइ ओ पाँच, बाँचए पुत्र करविअह नाच ।  
एहि सँ आन जा बाँचए आनि, चन्दा देखलें बड़ पुख पाथि ॥  
गाम नाम ओ गुर्विणी, नाम अक्षर एक फल ।  
"डाक" जाई छथि एक कय, शीनि भाग जे बाँचल ॥  
एक पूत दुइ कन्याक आस, शून्य बाँच सँ गर्भक नाश ।  
प्रश्न फल जा उलटा देखी, स्वामीक गर्भ मे संशय लेखी ॥  
अक्षर दोगुन चौगुन मात्रा, नामे नामे करी एकत्रा ।  
तीन अंक सँ भाग करी, भाग दोर सँ अक्षर भरी ॥  
ए शून्ये पहिले पात, दुइ रहय तँ जाय युवति ।

### वनस्पति प्रकरण

वृक्ष रोपवाक

का 'डाक' सँ सुनइ रावन, केरा रोपी अपाड़ साध ।  
ती सए साठि जे केरा रोपए, आवि निचिन्त घरहि भए सुत ॥



केरा रोपी काटी नहि पात, केरे देतहुं थोली भात ।  
फागुन केरा रोपल जाय, मास मास फल बैसल खाए ॥  
फागुन केरा ई शुभ चैत, कातिक ओन कहि नार ।  
तीनि बिलसते तेरह हत्ये, तीनि मासे तीनि दिने ॥  
भादव भदवा सीमी वारि, केरा रोपी दिन बिचारि ॥  
जौ नहि बरिसए अगहन मेष, कटहर गाछ फें होए घेष ।  
कहधि 'हाक' जौ होए पानि, टुटल ठारि कह गाछ बानि ॥  
गूसा गोबर बाँसहिं मौटि, बाँक नारिकेरि सिककटि काटि ।  
ओलमे कुरछुट छौं मान, बहए फलए ई 'हाक'क गान ॥  
डुमरी भीपरि पाकडि बड़, असमय फूलए देखि पड़ ॥

### विविध प्रसङ्ग

बामन कुत्ता हाथि, तीनु जातिअहिं खाथि ।  
कायथ कौआ रोड़, तीनु जाति बटोर ॥  
सए मे एक सहस्र मे काना, सवा लाख से ईँचा ताना ॥  
ईँचा ताना कहए 'पुकारि', हम मानल कुहरा सँ हारि ॥  
खिचड़ी सङ्ग जे नखरी खाए, मुहला बहुक नैहर जाए ।  
बाट चलैत जे गाथए गीत, कहए 'हाक' ई तीनु पतीत ॥  
बाती ठकनहि भाष तिले, कहिगेल 'हाक' मुखार ।  
चैत तुए तीनि लए सोए, कहहिं 'हाक' रौंदी होए ॥  
दिनमे बदरा रातिमे निबदर, बह पुरवया हवर हवर ।  
'कहहिं 'हाक' विश्या जनु खोअह, धानक खेतमे राहडि थोअह ॥

### प्रकीर्णध्याय

बड़द कीनचाक प्रसङ्ग

बएल कीनए जाइछ कन्ता, कएल गोल के न देखइ दन्ता ।  
चरक कसीटी सडरा धान, एहि झाड़ी जनु किनह आन ॥  
आहि पार मे देखिअह मैना, एहि पार सँ फेकिअह बैना ॥  
तीतए पंखी बादरा, विशवा कज्जल रेख ।  
ओ घर करए, ई घरिसए एहि मे मीन न मेष ॥  
शनि रवि परकी भङ्गल खाट, ई सभ ताकए स्वर्गक बाट ।  
साठी उपजय साठि दिना, जौ मेष बरिसय राति दिना ॥  
धनमे धान आओर धन गाय, किछु किछु सोना आओर सब छाया ।  
वरदा बहए तँ अपनहुं बही, नहि बहि होए तँ नैसको रही ।  
जे कहए हर बहए कहाँ, कहधि 'हाक' घंटो नहि तहाँ ॥  
हर बहए जे सङ्ग सङ्ग बही ॥  
नितइ खेती दोसरहि गाय, जे नदि देखए तकरहि जाए ॥  
कौंची कुची बैस्या घालए, ब्राह्मण घालए दासी ॥  
..... खोरहिं घालए दकासी ॥  
मोट दलमनि जे करए, नित छठि हरड़ा खाहिं ।  
दुध सलाका जे पिबए, ता पर वैद न आहिं ॥  
खाएक मूती सूती बाम, वैद अनएबाक कोनो ने काम ॥



—सत्तरि—

महत्तो सँ पहिया भेल थरी, कहए 'ढाक' सन्तापहि मरी ॥  
पछवा सँ उचड़ए मेघ, बिघवा करए बिगार ।  
ओ उचड़ए ओ बरिसए, कहि मेल 'ढाक गुआर' ॥

वर्ग विचार—

अ इ उ ए ग रुड़; क ख ग घ सजार ।  
च छ ज भ सिद्ध; ट ठ ड ढ स्थान ।  
त थ द ध नभ; प फ ब भ भूत ।  
थ र ल व हाथी; स ष स ह मेघ ॥

योगिनी विचार—

पत्नी पथा खरसा दोआ, नवे नवे योगीन होआ ॥

—१०१०—



## शब्दार्थ—संग्रह

- |                             |                               |
|-----------------------------|-------------------------------|
| अकके—अकस्मात्               | (क) कँकोड़ावान—समस्त          |
| अज—दकरी                     | कटिमटी—छटपट                   |
| अवरल—आव                     | कलस—कुम्भराजि                 |
| अनु—अनुराधा नक्षत्र         | कलह—झगडा                      |
| अभिजित्—नक्षत्रविशेष        | कलीम—कदीमा                    |
| अलि—पुष्टिक                 | कान—मुँक                      |
| अश्विनीपञ्चक—अश्विनी        | काना—कतहा                     |
| भरणी पत्तिका,               | कौर—गुआ                       |
| रौहणी, मृगशिरा              | कुआ—पञ्चकदिन                  |
| अहिमर—अहिमर—सप्तक,          | कसरि—मिहाराजि                 |
| स्वर संख्या ७ =             | क्षिप्र—शीघ्र                 |
| (आ) अष्ट—अष्टमीतिथि         | क्षिप्र—नक्षत्रक संज्ञा विशेष |
| (इ) इन्द्र—मूलिक फल विशेष । | क्षेम—कल्याण                  |
| इन्द्रसर—मूलकस्वर एक—१      | (ख) खीष्ट—तककर                |
| संख्या ।                    | (ग) गज—हाथी                   |
| इन्द्र—पूर्वादिशा           | गजसर—हाथीकस्वर, २ संख्या ।    |
| (ई) ईशा—स्वामी,             | गसना—गनन                      |
| (ए) एगारह—एकादशी तिथि       | गलसह—एक दसक योग               |
| एगुनासा—११-३, ५-७ तिथि      | (घ) घर—कुम्भराजि              |